64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ തൃശ്ശൂർ
തീയതി.....................

Item Code: 958 Participant Code: 042

TOPIC : मिट्टी की पुकार

प्रकृती की चिट्टी : मिट्टी

है ये बात बहुत अहम !
हूँ नहीं मैं किसी की रहम,
पल पल मैं हो रही खतम,
है नहीं ये कोई वहम ।

आते नहीं कोई मेरे साथ,
सुनते नहीं कोई मेरा बात ।
मेरे नाश में है तेरा नाश !!
समझ पाते, तुम यह काश ।

काट रहें तुम मेरे बच्चों को,
जिन्होंने दी है जान तुमको ।
जिनके हाथ में है तेरा जान,
है वो पेड़; प्रकृती की शान ।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി.................... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി തൃശ്ശൂർ

करती नहीं मैं किसीकी नुकसान,
अकेली अकेली, हो रही बरबाद ।
साथ को तुमने छीन ही ली ।
अब छीन रहे सहारा भी ?

अलग कर रहे तुम अपनों बच्चों ,
कहकर उनसे हूँ मैं कच्चों ।
सहारा था वो मेरा सच्चा,
हूँ मैं दोस्त उनका अच्छा !

हैं मानव, भूलना मत मुझे !
इतना भी ना कर अहंकार !!
तुम भी मुझसे ही बने हो,
अंत में मुझमें ही बसोगे ।

हूँ नहीं मैं कोई और,
हूँ मैं इस धर्ती की मिट्टी,
हूँ मैं प्रकृती की चिट्टी,
बंधे हैं तुमने आँख में पट्टी ।

बस एक बार कर मेरा याद।
जब खेलते थे तुम मेरा साथ,
जब भीगते थे हम एक साथ,
तब ज़िदगी थी कितनी खाँस!

अभी भी वक्त है तेरे पास,
उगा लो हर जगह घाँस।
कर लो शुद्ध इस वातावरण,
छोड़ दो धर्ती पर भरण।

छोड़ दो उन चार दीवार,
भूल जाओ वो चार लोग;
लौट आओ मेरे पास,
खेलते हैं फिर एक साथ।

बचा लो मुझे जल्द से जल्द!
उगा लो मुझमे पेड़ पौधे।
वर्ना देर बहुत हो जाओगे।
हम कभी ना मिल पाओगे।

~~अलग कर रहे अपने बच्चों को~~

मिट्टी से बने तुम,
मिट्टी में ही मिलोगे।
जब कल मिट्टी नहीं रहेंगे
तब तुम क्या करोगे ?

प्यास है मुझे पानी की
तड़प है मुझे प्यार की
तरस है मुझे अपनी माँ की
"हरियाली से भरी धर्ती की।